वेदान्त आश्रम एवं मिशन की मासिक ई - पत्रिका

वेदान्त पीयूष

वर्ष २४ फरवरी - २०२४ प्रकाशन - ०२

सम्पादिका :

स्वामिनी अमितानन्द सरस्वती

वेदान्त पीयूष

फरवरी २०२४

प्रकाशक

वेदान्त आश्रम,

ई - २९४८, सुदामा नगर

इन्दौर - ४५२००९

Web : https://www.vmission.org.in

email : vmission@gmail.com

वेदान्त पीयूष

विषय सूचि

1,	श्लोक	05
2.	पू. गुरुजी का संदेश	06
3.	वाक्यवृत्ति	12
4.	गीता और मानवजीवन	16
5.	जीवन्मुक्त	21
6.	मनु और दशरथ चरित्र	25
7.	कथा	29
8.	मिशन-आश्रम समाचार	32
9.	आगामी कार्यक्रम	47
10.	इण्टरनेट समाचार	48
11	लिन्क	50

फरवरी 2024

निषिध्य निखिलोपाधीन् नेतिनेतीति वाक्यतः।
विद्यादेक्यं महावाक्यैः जीवात्मपरमात्मनोः।।

(श्लोक - ३०)

'नेति नेति' श्रुति-वाक्यों के द्वारा सभी उपाधियों का निषेध करके महावाक्य द्वारा लक्षित जीवात्म-परमात्मा की एकता को जानें।

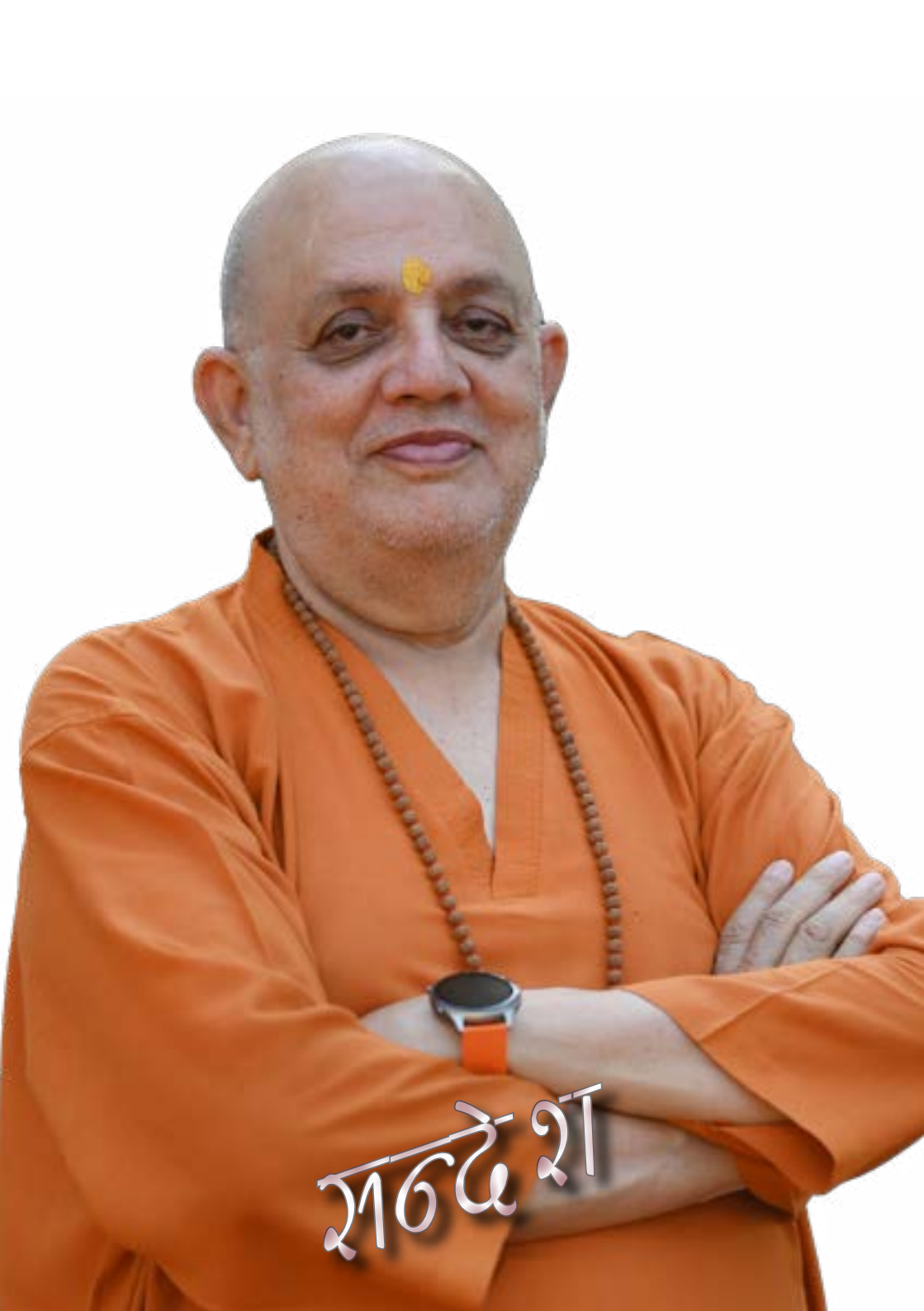
सन्देश

स्थितप्रज्ञ

स्थितप्रज्ञ के लक्षण बताते हुए भगवान कहते हैं कि जिनकी इन्द्रियां अपने वश में है, वह स्थितप्रज्ञ है। इन्द्रियों को वश में करने के लिए जीवन में लक्ष्य का महत्व स्थापित हो, और उसके प्रति प्रेम जग जाना चाहिए। जहां अहं की सन्तुष्टि की प्रधानता है, वहां इन्द्रियां स्वच्छन्द होती है।

यदि जीवन में लक्ष्य की महिमा स्थापित नहीं हुई, तो शनैः शनैः संसार में पतन की यात्रा आरम्भ होती है। विवेकी हो चाहे अविवेकी, उनके पतन की यात्रा किस प्रकार से होती है, इस मनोवैज्ञानिक तथ्य को भगवान यहां प्रतिपादित करते हैं।

यह सम्पूर्ण जगत शब्दादि पांच विषयों से युक्त है। अतः हर व्यक्ति का व्यवहार व जीवन इसी पांच विषयों की अनुभूतियों से युक्त होता है। अतः व्यवहार के समय जब किसी विषय

को अपने समक्ष पाता है, तो उसका संज्ञान होता है। किसी विषय का संज्ञान होना दोषवान् नहीं है। किन्तु इसके उपरान्त अपनी वासना व रागादि संस्कार से रंजित दृष्टि से देखने पर उसमें प्रियत्व वा अप्रियत्व की वृत्ति आती है; जो कि अपने अन्दर के कमी के एहसास तथा तत्-तद् विषय के प्रति सत्यता की बुद्धि के कारण होता है। जो प्रिय है, उसे सुख का हेतु समझता है, और उसका ध्यायतो विषयान्पुंसः - बार-बार ध्यान होता है, परिणामस्वरूप संगस्तेषु उपजायते - अर्थात् उसमें संग होने लगता है, उसके प्रति सुखबुद्धि का निश्चय और भी दृढ़ होता जाता है। उससे उसके स्मरण, विचार, चर्चा में सुख का अनुभव होता है।

संगात् संजायते कामः - इस संग का पर्यवसान कामना अर्थात् इच्छा में होता है। अब उन प्रिय वस्तु का स्वामित्व प्राप्त करने की इच्छा जगती है। जहां अब जीवन के सुख का केन्द्रबिन्दु एक मात्र वही है, तथा उसके बगैर स्वयं को अधूरा, जीवन को शुष्क मान लेता है। किसी विषय की कामना कान में घूसी हुई बरैया जैसी होती है, जो उसे चैन से बैठने नहीं देती है। अतः उसके लिए दिन-रात उसीकी प्राप्ति का संकल्प, उस संकल्प की पूर्ति हेतु योजना बनाना, उसे क्रियान्वित करने के लिए कर्म का आश्रय

लेना उसीमें उलझ जाता है। मन रूप शान्त झील में कामना भंवर उत्पन्न कर देती है। अन्ततः उसकी पूर्ति हेतु कर्म भी किया जाता है। किन्तु वहां यह कहानी समाप्त नहीं हो जाती। जब किसी चीज की तीव्र इच्छा ने मन रूपी झील को तरंगित कर के अशान्त किया होता है, वहां उस अशान्ति के निमित्त रूप इच्छा की समाप्ति तत्-तद् विषय की प्राप्ति में हो जाती है। तब मन क्षणिक रूप से शान्त तो हो जाता है, किन्तु वह सदैव के लिए एक प्रभाव डाल देता है कि वास्तविक सुख का स्रोत वही है। उसके उपरान्त उसे और भी उसके महद् रूप में पाने की कामना होती है। इस प्रकार यह कामना लोभ का रूप ले लेती है; जो कि उसे शाश्वत रूप से अशान्त और बहिर्मुख बना देती है।

कामात्क्रोधो अभिजायते - यदि किसी कारणवशात् कामना की पूर्ति नहीं हुई, तो उसमें जो भी ज्ञात वा अज्ञात वस्तु, व्यक्ति वा परिस्थिति बाधा बनती है, उसके प्रति उसमें क्रोध का जन्म होता है। यह क्रोध एक प्रज्जवलित अग्नि की तरह होता है, जो स्वयं को भी जलाता है और अन्य को भी। क्रोधात् भवति सम्मोहः - क्रोध की भभुकती हुई ज्वाला में शान्ति का तो नामोनिशान नहीं है, किन्तु साथ ही उचित-अनुचित का विवेक भ्रष्ट हो जाता है। उसे ही भगवान ने सम्मोह बताया। अब

विवेक से शून्य होने लगता है। सम्मोहात् स्मृति विभ्रमः – मानो आज तक अर्जित किए ज्ञान, अनुभूतिजन्य शिक्षा आदि सब विस्मृत हो जाते है। मनुष्य का मनुष्यत्व उसके धर्मादि विषयक विवेक के कारण ही होता है। किन्तु क्रोध के वशीभूत होकर मनुष्य की मनुष्यता से रहित पामर हो जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि मानों मनुष्य योनि में किसी असुर का ही अवतरण हो। यही मनुष्यत्व का विनाश है। इस प्रकार स्वयं ही अपने अप्रामाणिक ज्ञान और तज्जनित गलत धारणाओं के परिण ामस्वरूप अपना विनाश कर देता है। इस प्रकार वह अपने ही पतन के लिए हेतु बन जाता है। इसीलिए भगवान् इन्द्रियों के विषयों के प्रति रागादिजन्य प्रवृत्ति को विराम देने को कहते हैं।

Donate RED
Spread GREEN
Save BLUE

आदि शंकराचार्य

द्वारा

विरचित

वाक्यवृत्ति

स्वामिनी अमितानन्द

यस्य प्रसादादहमेव विष्णुः मयि-एव सर्वं परिकल्पितं च।
इत्थं विजानामि सदात्मरूपं तस्यान्घ्रि पद्मं प्रणतोऽस्मि नित्यम्।।

श्लोक – ०७

को जीवः कः परमात्मा
तादात्म्यं वा कथं तयोः।
तत्त्वमस्यादि वाक्यं वा
कथं तत्प्रतिपादयेत्॥

जीव किसे कहते है, परमात्मा कौन है? इन दोनों की एकता कैसे सम्भव होती है। तत्त्वमसि आदि महावाक्य के द्वारा इस एकता का प्रतिपादन कैसे किया जाता है? – यह हमें समझाइएं।

वाक्यवृत्ति

पूर्व श्लोक में आचार्य ने शिष्य की मुक्तिविषयक जिज्ञासा के समाधानरूप मुक्ति के साधन को बताया कि तत्त्वमसि आदि महावाक्य द्वारा जनित जीव और परमात्मा के ऐक्य का ज्ञान ही मुक्ति के लिए प्रमाण है।

शिष्य अत्यन्त सजगता के साथ श्रद्धापूर्वक गुरु के वचनों को सुनकर ग्रहण कर रहा है। अतः गुरु के द्वारा मुक्ति के साधन रूप महावाक्य में जीवात्म-परमात्म के एकत्व का जो ज्ञान बताया जा रहा है, उस विषयक प्रश्न पूछता है। ज्ञान का अभिप्राय मात्र कुछ बौद्धिक, परोक्ष ज्ञान से युक्त होना नही है, किन्तु उसे आत्मसात् करते हुए अपरोक्षतः जानना है।

जब आचार्य जीवात्म-परमात्मा के एकत्व की बात करते हैं तो स्वाभाविक ही ऐसी मनोस्थिति से युक्त शिष्य में जिज्ञासा होती है कि यदि जीव-परमात्मा के एकत्व को जान लिया तो हमें कैसे

मुक्ति प्राप्त होगी। अतः जीव और परमात्म शब्द से परिचित होना आवश्यक है। आज तक के संस्कार और परिवेश के हिसाब से परमात्मा ईश्वर को ही माना जा रहा है, जो कि जगत् के सृष्टा, संचालक, हमारे समस्त कर्म के फलप्रदाता हैं। जिसे आज जीव की तरह जान रहे हैं वह संसार के अन्तर्गत विद्यमान एक प्राणी है, जो जीवनतत्त्व से युक्त है।

यदि जिसे हम जीव और परमात्मा समझ रहे हैं, वह हमारी परिभाषा सत्य है तो किस तरह से दोनों का ऐक्य सम्भव हो सकता है? इसलिए शिष्य गुरु से निवेदन करता हैं कि हम जीव कौन है, परमात्मा कौन है यह नहीं जानते हैं, तो उन दोनों के ऐक्य को कैसे ग्रहण कर सकते है? इसलिए कृपया हमें इस विषयक समझ प्रदान करें।

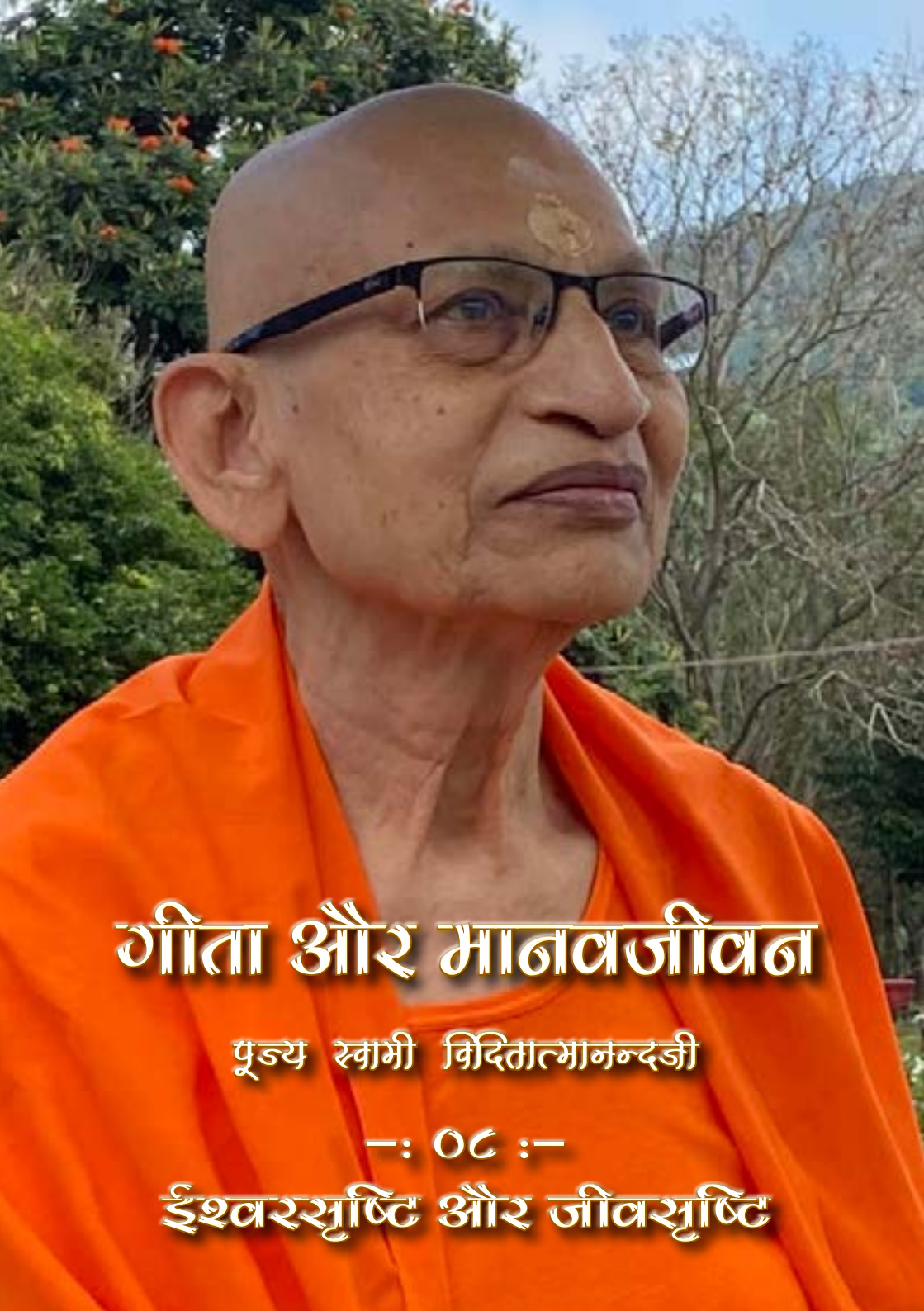

गीता और मानवजीवन

पूज्य स्वामी विदितात्मानन्दजी

—: ०८ :—

ईश्वरसृष्टि और जीवसृष्टि

गीता और मानवजीवन

शास्त्र बताते हैं, दो प्रकार की सृष्टि है १. ईश्वरसृष्टि २. जीवसृष्टि। ईश्वर ने इस सुन्दर जगत का सृजन किया हैं, आनन्दमय सृजन किया हैं। समग्र सृष्टि का सृजन आनन्द की अभिव्यक्ति की तरह हुआ है। आनन्द ही समग्र सृष्टि का पालन करता है और आनन्द में ही समग्र सृष्टि का विसर्जन होता है।

किन्तु हमें जगत में आनन्द तो कदाचित् ही दीखता है। क्योंकि यह सृष्टि जैसी है, हम यथावत् बहुत ही कम देखते है, कदाचित् ही उसके साथ उस रूप में सम्पर्क करते हैं। ईश्वर ने तो पंचमहाभूत में से इस सृष्टि का सृजन किया, हमारा देह, मन, बुद्धि यह सब ईश्वर की रचना है। किन्तु इस सृष्टि के साथ साथ अन्य भी एक सृष्टि है और वह है जीवसृष्टि। अपने राग – द्वेष, काम, क्रोध, ईर्ष्या, आत्मतिरस्कार इन सब विकारों का हमने ही सृजन किया है। यह हमारा ही सृजन है, अपने द्वारा रची हुई सृष्टि है, जिसके चश्में पहनकर ही हम ईश्वर की सृष्टि को

गीता और मानवजीवन

देखते हैं। स्वप्न में जिस प्रकार हम अपने संस्कार के अनुरूप कैसे भी जगत का सृजन करते हैं, अपनी व्यक्तिगत सृष्टि का सृजन करते हैं, वैसे ही जाग्रत अवस्था में भी मन किसी प्रकार का सृजन करता ही है। मन को ऐसी आदत हो गई है कि कोई वस्तु सम्पर्क में आएं तो उसे निजी संस्कार के अनुरूप उस पर कोई न कोई अध्यारोप करके देखना अर्थात् ईश्वर की सृष्टि जैसी है, वैसी देखने के बजाय अपने द्वारा विरचित जीवसृष्टि के चश्में से मनुष्य देखता है। भूतकाल में जिनसे अच्छा अनुभव हुआ हो, उसके प्रति राग, जिनसे बुरा अनुभव हुआ हो, उनके प्रति द्वेष, अपनी दृष्टि में अनुकूल परिस्थिति के प्रति राग, प्रतिकुल परिस्थिति के प्रति द्वेष – इस प्रकार प्रत्येक अनुभव में से राग या द्वेष साधारणतः जन्म लेते हैं।

सामान्यतः हम अपनी व्यक्तिगत दुनिया में ही रत रहते है और ईश्वर की दुनिया को जिसे व्यावहारिक जगत कहते है, उसे कदाचित् ही यथावत् देखते हैं। व्यावहारिक जगत के बजाय प्रातिभासिक जगत अर्थात् अपनी कल्पना के जगत में अपने द्वारा किए आरोपों में ही रत रहते हैं। कभी कभी इस काल्पनिक

गीता और मानवजीवन

आन्तरसृष्टि में से मुक्त होकर ईश्वर की सृष्टि को जैसी है, वैसी ही उसे अनुभव करते हैं, तब विश्रान्ति व आनन्द का अनुभव कर पाते हैं। किसी समय प्रकृति के सौन्दर्य के मध्य में होते है, गंगाकिनारे भ्रमण करते हुए समक्ष स्थित पहाड़ों को निहार रहे हो, और उस समय हमारा मन इन सब आरोपों से मुक्त हो जाएं, समस्त चिन्ताओं का बोझ उस पर से उतर जाएं, राग-द्वेष, संसार के झमेले में से मुक्त हो जाए तब सौन्दर्य के आनन्द का पूर्णतः रसास्वादन कर सकते है। क्या यह आनन्द उन पहाड़ों या पथ्थरों मे है? गंगाजी के शीतल जल में है? - नहीं, हमारा मन ही अपनी समस्त ग्रन्थियों से मुक्त है, समस्त राग-द्वेषों से मुक्त है, अपने शहर का संसार क्षणभर के लिए विस्मृत कर गए है, उसका यह आनन्द है। हम बहुत सारा बोझ लेकर घूमते रहते है। जब हम इन समस्त बोझ को कुछ क्षण के लिए किनारे कर देते है, ईश्वर की सृष्टि के सौन्दर्य अपनी और आकृष्ट करके उनमें तन्मय बना दे, वह जैसा है वैसा यथावत् रूप से रसास्वादन कर सके, तब हम आनन्द का अनुभव करते हैं, सुख का अनुभव करते हैं।

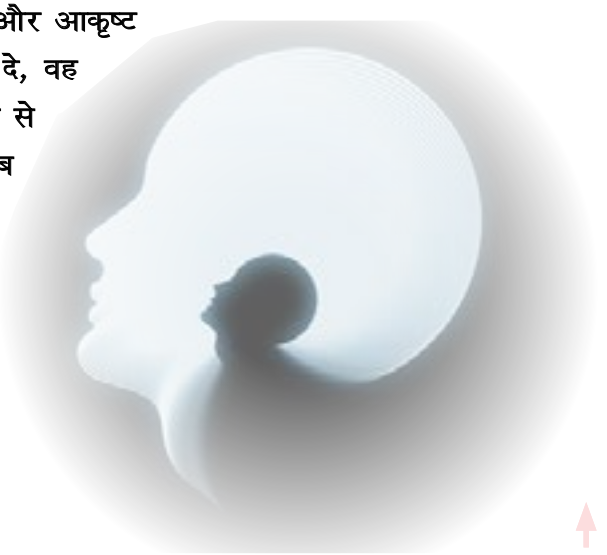

गीता और मानवजीवन

सुख के किसी भी अनुभव का विश्लेषण करे तो यह समझ आएगा कि जब हमें सुख का अनुभव होता है तब जिन परिस्थिति या घटना से सुख प्राप्त किया होता है, वह घटनाएं, निमित्त भले ही बदलते रहे, किन्तु उस निमित्त के कारण हमारी जो मानसिक स्थिति उद्‌भवती है, जिसे हम सुख कहते है, वह प्रत्येक अनुभव में समान होती है। इस समय हमारा मन क्षणभर के लिए राग-द्वेष आदि से मुक्त हो जाता है। तब हमें ऐसा लगता है कि यह आनन्द उस निमित्त में से या बाहर से आया। किन्तु यह आनन्द तो वस्तुतः अपने अन्तर का ही होता है, जो उन राग-द्वेष रूपी जीवसृष्टि से ढका हुआ है और किसी विषय या परिस्थिति की उपस्थिति में यह आवरण दूर होने पर अभिव्यक्त हो जाता है। इस क्षण हमारा मन जीवसृष्टि के बोझे से मुक्त हो गया होता है और इसलिए ईश्वरसृष्टि पर जो अध्यारोप हुए थे, उसे विकृत दृष्टि से देखा जा रहा था, उसके बजाय अब वह जैसी है, उसी प्रकार से उसका रसास्वादन करते है। इसलिए ईश्वर ने जो सृजन किया है, उसका मुक्त मन से आनन्द ले सके, जीव के किए सृजन से मुक्त रहकर अनुभव कर पाएं तो सदैव आनन्द ही आनन्द है। इसीलिए ज्ञानी पुरुष सदैव आनन्द में होते है।

जीवनमुक्त

– ४२ –

गंगोत्री

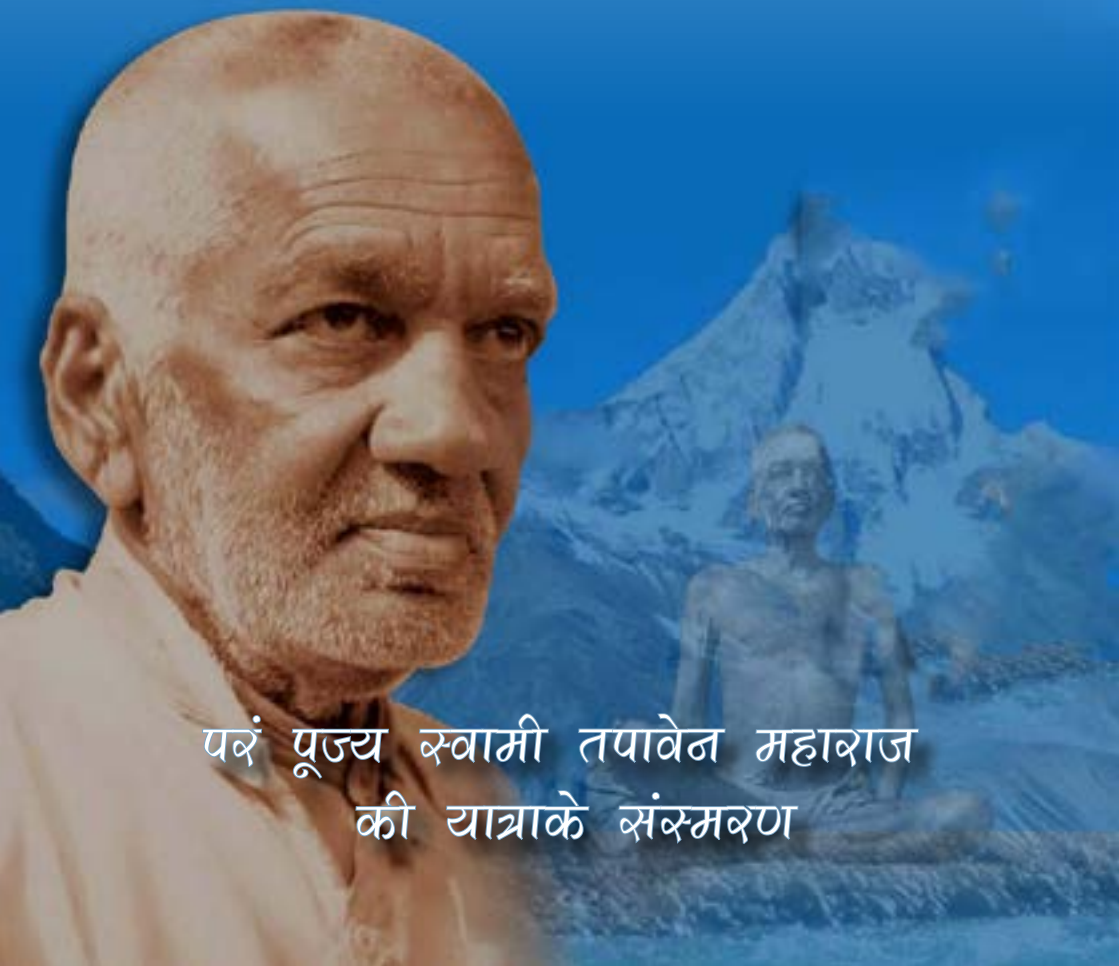

परं पूज्य स्वामी तपावेन महाराज
की यात्राके संस्मरण

जीवन्मुक्त

गंगा समुद्रजल या तालाब के जल के समान साधारण जल नही है। वह सर्वान्तर्यामी तथा सर्वाधिष्ठान स्वरूप साक्षात् परब्रह्म ही है। पर यदि कोई प्रश्न करे कि भागीरथी के जलमात्र न होने, बल्कि सर्वत्र परिपूर्ण परमात्मवस्तु होने का प्रमाण क्या है तो 'श्रद्धा–श्रद्धा' किसी भागीरथी भक्त का उत्तर होगा। सब धर्मो और सब आचार्यों द्वारा समुद्घोषित तत्त्व यह है कि आध्यात्मिक कार्यों में बुद्धि से अधिक श्रद्धा का ही प्राधान्य रहता है। बुद्धि शक्ति से अब तक किसी ने अध्यात्म निष्ठा नहीं पायी है। किन्तु श्रद्धा के द्वारा बडी आसानी से अध्यात्म निष्ठा पा सकते है। इतना ही नही, यह संसार में सर्वत्र देखा जाता है कि श्रद्धालु लोग शुद्धचरित्र और सद्गुण निधि होकर सुखपूर्वक जीवन बिताते हैं तथा बुद्धिशाली लोग चरित्रहीन और दुर्गुण

निधि होकर दुःख से दिन काटते हैं। गंगा एवं गंगोत्री तथा राम एवं रामेश्वर को ईश्वर रूप अथवा ईश्वरीय शक्ति से सम्पन्न विशिष्ट वस्तु सिद्ध करने में शिष्ट परम्परा एवं पुराण वचनों की श्रद्धा को छोड न्यायवाद या प्रत्यक्षादि प्रमाण समर्थ नहीं हो सकते। अतः इतिहास में ऐसी कई कहानियां देखी जाती हैं कि अनुमान कुशल बुधजनों ने भी अध्यात्मविषय की आकांक्षा में पांडित्य गर्व को छोड़ छाड़कर श्रद्धादेवी की उपासना ही है।

जो रामेश्वर दर्शन करिहै।
सो तनु तजि मम धाम सिधारिहिं।।
जो गंगाजल आनि चढाइहिं।
सो सायुज्य मुक्ति नर पाईहिं।।

''जो जाकर रामेश्वर का दर्शन करता है, वह शरीर छोड़कर वैकुण्ठ को पा लेता है। जो गंगाजल को रामेश्वर ले जाकर देव का अभिषेक करता है, वह सायुज्य मुक्ति को पा जाता है।''

भक्ति से मदोन्मत्त हो तुलसीदास ने जब यह गान किया होगा तब वह पांडित्य-साम्राज्य से कितने ही नीचे उतर कर श्रद्धा के राज्य में विहार कर रहे होंगे - यह बताने की आवश्यकता नहीं है। यहां यह भी स्पष्ट कर दिया जाए कि तर्क-कुशल महापण्डितों ने भी केवल श्रद्धा पर ही अवलम्बित होकर कई

सिद्धान्त और कई कई परिभाषाएं तथा कई ग्रंथ निर्मित किये है। सच तो यह है कि श्रद्धा की लकडी के बिना अति विकट तथा दुर्गम अध्यात्म मार्ग पर चलते हुए गन्तव्य स्थान पर पहुंच जाना बिल्कुल सम्भव नहीं है।

(श्री रामचरित मानस पर आधारित)

श्री मनु और दशरथ चरित्र

– ११ –

धर्म तें बिरति जोग तें ग्याना।
ग्यान मोच्छप्रद बेद बखाना।।

मनु और दशरथ चरित्र

श्रीराम को वनवास देने पर महाराज श्री की ग्लानि अपनी चरम सीमा पर थी। उन क्षणों में उन्हें अपनी युवावस्था की उस दुर्घटना का स्मरण आता है जब उनके शब्दबेधी बाण ने श्रवण कुमार के प्राण ले लिए थे। उस समय वे आत्म विश्वास की चरम सीमा पर थे। उन्हें पूरा भरोसा था कि वे केवल शब्द सुनकर बाण के द्वारा लक्ष्य बेध कर सकते हैं। आत्म विश्वास के इस अतिरेक ने ही उन्हें श्रवण कुमार के द्वारा जल के लिए नदी में डुबोए जानेवाले घट को पशु की ध्वनि समझकर बाण चलाने की प्रेरणा प्रदान कर दी। इस प्रकार वे एक ऐसे युवा पुत्र के वध का पाप अपने सिर पर ले बैठे जो अन्धे माता-पिता का एक मात्र आश्रय था। श्रवण कुमार के माता-पिता ने अपने पुत्र के वियोग में प्राणों का परित्याग कर दिया और मरते समय महाराज श्री दशरथ को पुत्र वियोग में प्राण परित्याग का श्राप दे दिया। आज वे सारी घटनाएं महाराज के मनश्चक्षुओं के समक्ष आने लगीं। उन्हें लगा कि एक राजा के रूप में उनसे न्याय पराणता की आशा

मनु और दशरथ चरित्र

की जाती है। दूसरों के प्रति न्याय करना कठिन है किन्तु जब स्वयं को व्यक्ति न्याय सिंहासन के पास खड़ा पाता है तब वह विचलित हुए बिना नहीं रहता। महाराज श्री को लगा कि वे अपने प्राण का परित्याग करके ही अपने किए हुए अन्याय का परिमार्जन कर सकते हैं। और उन्होंने इस महात्याग के द्वारा न केवल अपने अपयश का ही प्रक्षालन कर लिया अपितु उनकी गणना प्रेम के महानतम बलिदानियों में की जाने लगी। महारानी कौशल्या ने भले ही महाराज को प्राण के परित्याग से रोका हो पर उनकी मृत्यु के पश्चात् उन्हें यह ग्लानि सर्वदा व्यथित बनाती रही कि मैं महाराज की भांति प्रेम में अपने प्राणों को न्योच्छावर न कर सकी।

किन्तु महाराज दशरथ की गाथा को गोस्वामीजी उनकी मृत्यु पर ही नहीं समाप्त कर देते। मृत्यु को जीवन का अन्त मान लेना भारतीय जीवन दर्शन की धारणा के विपरीत है। उनकी दृष्टि में जीवन एक दुःखान्त नाटक नहीं है। यदि जीवन ईश्वर की कृति है तो उसे दुःखान्त होना भी नहीं चाहिए। इसीलिए प्राचीन भारतीय साहित्य में दुःखान्त रचना का अभाव है। महाराज श्री की मृत्यु जिन परिस्थितियों में हुई थी, वह एक करुण कथा का पीड़ा भरा अन्त होता, पर

मनु और दशरथ चरित्र

इस गाथा की समाप्ति लंका के रणांगण में होती है। रावण-वध के पश्चात् अपने पुत्र के विजयोत्सव का दर्शन करने के लिए युद्ध-क्षेत्र में आते हैं। उनके आनन्द की कोई सीमा नहीं। उनकी ग्लानि का परिमार्जन भी इसी उपाय से हो सकता था। राम का वनगमन अन्त में लोक कल्याण का हेतु सिद्ध हुआ। यदि वे वन में न आते तो इस लोक के कण्टक रावण से संसार को मुक्ति कैसे प्राप्त होती? मर्त्यलोक से लेकर स्वर्ग तक उनकी जय ध्वनि सुनकर महाराज का हृदय गदगद् हो जाता है। प्रभु भी अपने अनुज के साथ उठकर खड़े हो जाते हैं और उनके चरणों में नत होते हैं। इस विजय का सारा श्रेय पिता श्री के पुण्य को प्रदान करते हैं।

महाराज श्री के जीवन का यह सर्वोच्च क्षण था। मनु से लेकर दशरथ तक की उनकी जीवन-यात्रा अन्त में अपने लक्ष्य की उपलब्धि में समाप्त होती है।

कथा / प्रसंग

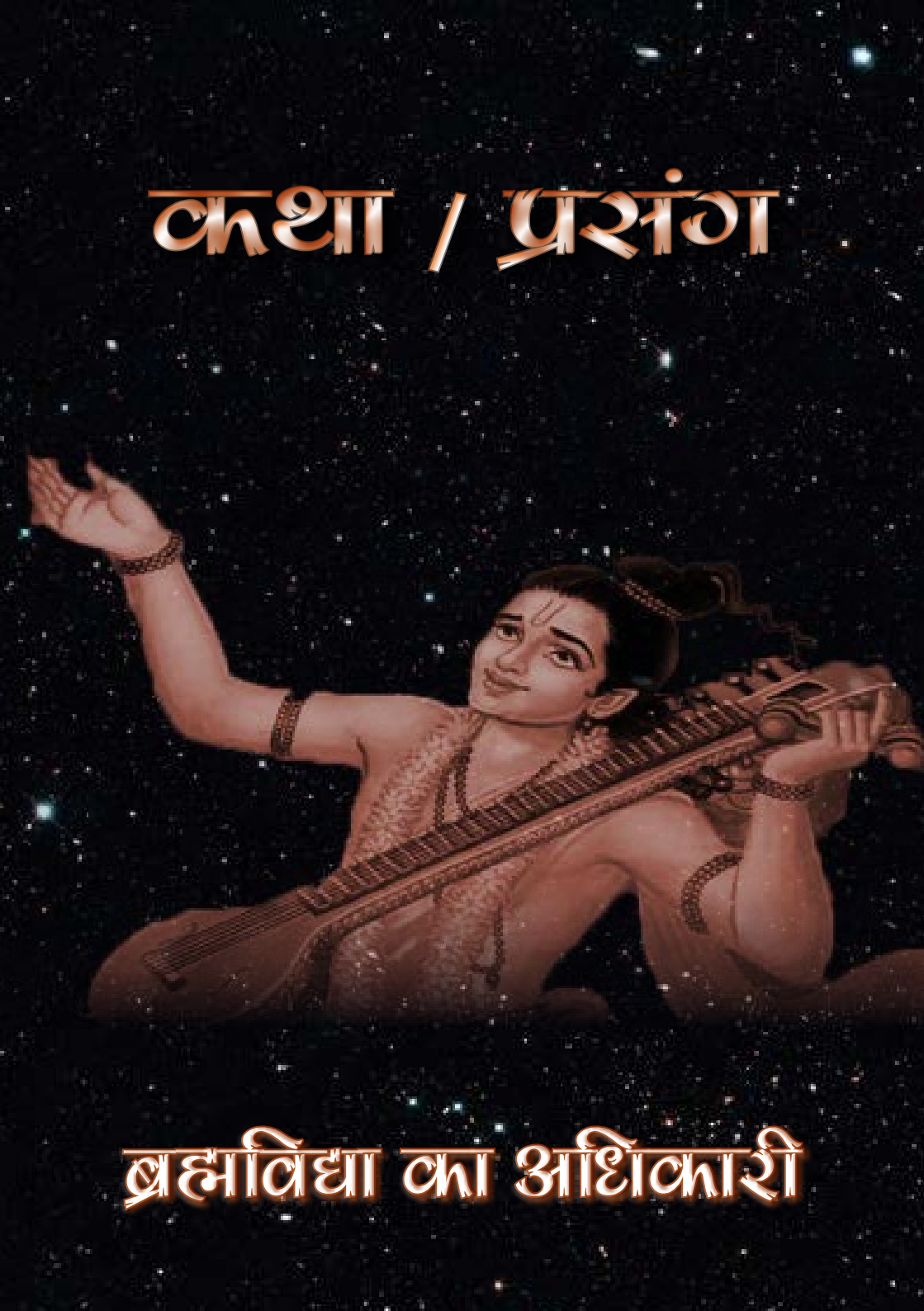

ब्रह्मविद्या का अधिकारी

ब्रह्मविद्या का अधिकारी

एक महर्षि याज्ञवल्क्य प्रतिदिन वेदान्त के ज्ञान का उपदेश देते थे। वहां पर अनेको शिष्यगण, मुनिगण तथा राजा जनक भी श्रवण करने आया करते थे। महर्षि तब तक उपदेश का आरम्भ नहीं करते थे, जब तक राजा जनक आ न जायँ। इससे श्रोताओं के मन में अनेक प्रकार के सन्देह उठते थे कि, 'कहीं ऐसा तो नहीं है कि महर्षि भी राजा के वश में हों।' कई मुनिगण इस कारण ईर्ष्या से जला भी करते थे।

याज्ञवल्क्यजी समस्त अन्य श्रोतागणों की मनोयातना को ताड़ गए। एक दिन उन्होंने अपनी योगशक्ति से एक लीला रची। चारों ओर आग लग गई। महाराज जनक के राज्य के साथ आश्रम तक भी लपटें आने लगी। समाचार मिलते ही श्रोतागण उठे और सब अपने धर और कुटिया की ओर दौड़े। अपने कमण्डलु, वल्कल आदि वे सुरक्षित रखने लगे। उसी समय राजसेवक ने आकर खबर

दी कि 'महाराज! मिथिला में आग लगी हुई है। राजा ने सेवक की बात को अनसुना कर दिया, कहा कि 'मिथिलायां प्रदग्ध ाायां न में किंचित दह्यते। अर्थात् मिथिला जलने से हमारा कुछ नहीं जल रहा है। जिस समय हम राज सिंहासन पर है, उस समय हमारा कर्तव्य है कि मिथिला की रक्षा करें। किन्तु इस समय ब्रह्मज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण अन्य कुछ भी नहीं है।' महर्षि का प्रवचन चालू ही रहा। थोड़े ही क्षणों में महर्षिजी ने अपनी लीला समेट ली। समस्त मुनिगण सर झुकाये हुए आकर बैठ गए। सब को महाराज जनक की पात्रता के बारे में पता लग गया और राजा जनक के प्रति दुर्भावना के बदले में क्षमा याचना करने लगे।

Mission & Ashram News

Bringing Love & Light
in the lives of all with the
Knowledge of Self

आश्रम / मिशन समाचार

गीता ज्ञान यज्ञ, गोरेगांव

आश्रम / मिशन समाचार

गीता अध्याय - ३

पू. स्वामिनी समतानन्दजी

आश्रम / मिशन समाचार

Blessings of Bhagwan Sri Krrishna

आश्रम / मिशन समाचार

Gita Gyan Yagya, Baroda

By P. Swamini Amitanandaji

आश्रम / मिशन समाचार

Puja of Bhagwan Sri Gangeshwar Mahadev

By Dr. Siddharth Arora, Oxford (UK)

आश्रम / मिशन समाचार

Swami Asangananda (Russia) doing Puja of Shivji

Celebrating 60th Birthday at Ashram

आश्रम / मिशन समाचार

Love of all expressing as delicious delicacies too

आश्रम / मिशन समाचार

Visit to Vishram Bagh Park-Indore

Replica of Sri Ram Mandir of Ayodhya

Art from Iron Waste

आश्रम / मिशन समाचार

Welcoming 2024 with Bhajans

आश्रम / मिशन समाचार

Sri Gangeshwar Mahadev Abhisheka by Pradeep & Rekha Sharma

Taking Blessings of Annivaersary

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

आश्रम / मिशन समाचार

Visit to the Wildass Sanctuary in LRK (Guj)

आश्रम / मिशन समाचार

Migratory Birds at LRK

गीता ज्ञान शिविर

छह दिवसीय आवासीय शिविर

दि. 3 से 8 मार्च 2024

विषय : गीता अध्याय 15

पुरुषोत्तम योग

(संसार से पुरुषोत्तम की यात्रा)

8 मार्च 2024

महा शिवरात्री उत्सव

पूज्य श्रीजी
स्वामी आत्मानन्दजी सरस्वती

ध्यान / प्रवचन / शिव अभिषेक
श्लोकपाठ / संस्कृत / प्रश्नोत्तर / भजन आदि

स्थान: वेदान्त आश्रम
सेक्टर-ई, 2948 सुखमा नगर, इन्दौर

website : www.vmission.org.in / vashram@gmail.com

/ 7000361938 / 9329487329

आश्रम / मिशन समाचार

श्रीमद् भगवद् गीता

(शांकर भाष्य समेत) नित्य कक्षाएं

प्रतिदिन प्रातः .30 बजे से (मंगल से शनिवार)

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

गीता ज्ञान शिविर

अध्याय – 15 (पुरुषोत्तम योग)

दि. 3 से 8 मार्च 2024;

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

पूज्य गुरुजी स्वामी आत्मानन्दजी

एवं वेदान्त आश्रम के अन्य महात्मा

महा शिवरात्री उत्सव

दि. 8 मार्च 2024;

वेदान्त आश्रम, इन्दौर

Internet News

Talks on (by P. Guruji) :

Video Pravachans on YouTube Channel

(Click here)

Gita / Upanishad/ Prakaran Granthas

Sundarkand / Hanuman Chalisa

Shiv Mahimna Stotram / Chanting

Moral Stories etc

Audio Pravachans (Click here)

Gita / Upanishad/ Prakaran Granthas

Vedanta Ashram YouTube Channel

Vedanta & Dharma Shastra Group

Monthly eZines

Vedanta Sandesh - Jan '24

Vedanta Piyush - Dec '23

Visit us online :
Vedanta Mission

Check out earlier issues of :
Vedanta Piyush

Join us on Facebook :
Vedanta & Dharma Shastra Group

Subscribe to our WhatsApp Channel
Vedanta Ashram Channel

Published by:
Vedanta Ashram, Indore